# (1) राजस्थानी लोक कलाएँ

सौन्दर्य को दृश्य के रूप में प्रकट करना ही कला है। कला, मनुष्य की सौन्दर्य कल्पना को साकार करती है। मनुष्य के मन में इस संसार और प्रकृति के क्रिया-व्यापारों के प्रति, जो संवेदनाएँ जाग्रत होती है, उन्हीं का भावात्मक सौन्दर्य बोध अपनी विशिष्ट कला के रूप में व्यक्त होता है। शास्त्रीय-चेतना से शून्य, पांडित्य प्रदर्शन से सर्वथा दूरवासी लोक समाज का कलाकार अपनी सौन्दर्यानुभूति को चित्र, संगीत एवं नृत्य आदि के माध्यम से व्यक्त करता है तो वह लोक कला कहलाती है। लोक कला के माध्यम से लोक-संस्कृति का स्वरूप उजागर होता है।

## (1) आंगन व भित्ति मांडणा :-

लोक कलाओं में मांडणा की परंपरा बहुत विशेष है। राजस्थान के जनजीवन में माण्डणों का विशेष महत्व है। घर, आंगन, द्वार, शरीर के अंग, वस्त्र, शस्त्र आदि सभी वस्तुओं को मांडणों से सजाया जाता है। मांडणे मांगलिक माने जाते है। अतः विवाह हो या जन्मोत्सव, अनुष्ठान या त्यौहार, व्रत, उपवास हो या देव प्रतिमा की प्रतिष्ठा सभी शुभ अवसरों पर ~~मांड~~ मांडणा मण्डित किए जाते है। राजस्थान में एक कहावत भी प्रचलित है - 'लड़का चाहे कुंवारा रह जाए पर आंगन कभी कुंवारा नहीं रहना चाहिए' - इसलिए आंगन की लीपा - पोती करने के बाद उसे खाली नहीं रहने दिया जाता। आंगन को मांडणा विहीन रखना अपशगुन माना जाता है। अतः और कुछ नहीं तो

Scanned with CamScanner

स्वास्तिक ही बना दिया जाता है। उत्सव या मांगलिक अवसर पर नारियां बहुत रूचि से आंगन में सफेद खड़िया, गेरू आदि से तरह-२ के मांडने मांडती है। जैसे सावन के त्योहारों पर चौपड़, सात फूल, फुलड़ी आदि मांडती है। दीपावली के अवसर पर लिछमी जी रां पगलियां, कलश, नारियल, सूरज, सोलह दियां चौक, बंदनमाला आदि मांडने बनाने का विधान है। रंगों के त्योहार होली के अवसर पर तो चंग, बाजोट, चौपड़, घेरा आदि मांडने मांडकर अपने हृदय के हर्षोल्लास को राजस्थानी नारी व्यक्त करती है। विवाह के मांडनों में पगल्या, बाजोट, कलशबुड्ड, घेवर आदि मांडे जाते है। यदि कोई तीर्थ यात्रा करके सकुशल घर लौटता है तो इस खुशी में पुष्कर पेड़ी तथा पशुवारी मांडी जाती है। मांगलिक अवसरों पर आंगन के मांडनों के साथ-२ घर के मुख्य द्वार, शयनकक्ष, अतिथिकक्ष इत्यादि को भी मांडनों से सुसज्जित किया जाता है। इनको सफेद, लाल, नीले, पीले तथा हरे रंगों से विशेष आकर्षक बनाये जाते है। मांडनों में त्रिभुज, चतुष्कोण, षट्कोण, अष्टकोण, वृत्त आदि की आकृतियां बनायी जाती है। मांडनो में स्वास्तिक का मांडन भी मांगलिक माना गया है। यह गणपति का प्रतीक चिन्ह है। स्वास्तिक को विष्णु का सुदर्शन-चक्र भी माना गया है। इसी तरह षट्कोण लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है। त्रिभुज ब्रह्मा, विष्णु और महेश के प्रतीक है। इसी तरह चतुष्कोण चार दिशाओं के प्रतीक है। ये मांडने मात्र चित्र ही नहीं है बल्कि समग्र मानव चेतना के रूप है। इनमें हमारे सांस्कृतिक आदर्श निहित है तथा लोकमंगल की भावना विद्यमान है।

(२) शरीर के अंगों पर मांडने (गोदना) ⇒ शरीर के अंगों को सुसज्जित करने की दृष्टि से गोदना मांडने की पर-

पुरा का विकास हुआ। उच्च वर्ग के लोग अस्थायी मांडणे के रूप में कुमकुम तथा चंदन द्वारा मुँह को सजाने लगे। वे लोग हाथ पर केवल अपना या प्रिय जन का नाम या फिर बेल बूटी बनवा लेते। उनके पास श्रृंगार की के पर्याप्त साधन होते थे इसलिए ये शरीर के विभिन्न अंगों पर गोदना नहीं गुदवाते थे। इसके विपरीत निम्न वर्ग तथा आदिवासी लोगों में गोदना बनवाने का अधिक प्रचलन रहा। इनके पास पर्याप्त धन व आभूषण न होने के कारण शरीर के विविध अंगों पर गोदने बनवाकर वे अपनी सौन्दर्य भावना को संतुष्ट कर लेते थे। औरतें ललाट पर चाँद, तिलक आदि गुदवाती थी। वे आँखों को तीर के समान पैनी बनाने हेतु नीचे की पलक के साथ सायो गुदवाती थी, गर्दन पर कंठमाल, भुजाओं पर बाजुबंद। कृष्ण, गणेश, सूरज, रामदेव जी का पगल्या, शिव, त्रिशूल तथा विभिन्न पशु-पक्षियों की आकृतियाँ भी गुदवाती थी।

अंगों के मांडणों में मेहन्दी व महावर का विशेष महत्व है। सौभाग्यवती नारियाँ हाथों व पाँवों में मेहन्दी व महावर लगाती है। कुंवारी बालिकाएँ केवल हाथों में मेहन्दी लगाती है। वे गणगौर के अवसर पर चुंदड़ी, पेड़ा के मांडणे, तीज पर लहरियाँ, घेवर, दीवाली पर पान, गलीचा तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर फूल-पत्तियाँ, सूर्य, कलश, मोर, बेल-बूटे आदि मांडती है। सोजत व मालवा की मेहन्दी मारवाड़ में बहुत प्रसिद्ध है।

## (3) वस्त्रों पर अंकित मांडणे ⇒

राजस्थान में वस्त्रों पर भी मांडणे बनाए जाते है। वस्त्रों पर कढ़ाई करके या बन्धेज और छपाई से वस्त्रों पर मांडणे बनाने की कला बहुत प्रसिद्ध है। बन्धेज तथा चुंदड़ी तो विश्व प्रसिद्ध है। बन्धेज में वस्त्रों को धागे से बाँधकर रंग में डुबोकर चुंदड़ी, पोमचा, लहरियाँ आदि आकृति के मांडणे बनाए जाते है। इसके अलावा फाग-

Scanned with CamScanner

गियाँ पतंग, पचरंगा, डिब्बा आदि ओढ़नी भी रंगाई-छपाई जाती है। कढ़ाई में कलावत और रेशम के धागे से सुंदर-2 बेल-बूटे, फूल-पत्तियाँ बनायी जाती है तथा उसे सलमा-सितारो से सजाया जाता है एवं उन्हें गोटे किनारी से भी वस्त्रों पर फूल आदि बनाकर सजाया जाता है।

(५) बर्तनों पर अंकित मांडणे ⇒

राजस्थान में विभिन्न बर्तनों पर भी मांडणे बनाए जाते है। जिनमें स्थायी रंगों का प्रयोग किया जाता है। चाँदी व धातु के बर्तनों पर नक्काशी की जाती है। मिट्टी के बर्तनों पर भी मांडणे मांडे जाते है। मिट्टी की मटकी, लोटा, गिलास, हांडी व ढकनी को लाल रंग से रंगकर खड़िया मिट्टी व चूने से मांडणे मांडे जाते है।

(५) अस्त्र-शस्त्रों पर अंकित मांडणे ⇒

राजस्थान के राजा, सामंत और सेनापति अपने अस्त्र-शस्त्रों पर मांडणे बनवाते थे। इनकी तलवार, ढाल, कटार पर सुंदर नक्काशी होती थी। तलवार की मूठ पर प्रायः दहाड़ते हुए शेर की मुखाकृति या साँप की मुखाकृति बनायी जाती थी। किन्तु अस्त्रों-शस्त्रों का उपयोग न होने के कारण धीरे-2 मांडणों की यह परंपरा लुप्त हो गयी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि, राजस्थान में लोक कलाओं का विलक्षण भंडार प्राप्त होता है। इन कलाओं में लोक अभिरुचियों की समग्र सहज अभिव्यक्ति के दर्शन किए जा सकते है। विवाह के अवसर पर घर की दीवारों पर स्वागतम, पधारो सा के साथ-2 श्री गणेश, लक्ष्मी जी, बारात के साथ हाथी, घोड़े व ऊँट का चित्रांकन करना अथवा मेहन्दी मांडणा और गोदने की कला आदि में राजस्थानी जन समाज की मनोभावनाओं का चित्रण होता है।

Scanned with CamScanner